Lecture No. 21

Dr. Madan Paswan, History.

Date: 23.07.2020

(1)

Class: B.A. Part-I (Hons.) Paper-Ist

पाठ्यक्रम Unit-II : Pre-Mauryan Period

(ii) Religious Movements – Buddhism.

बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे। छठी शताब्दी ई०पूर्व में धर्मसुधार आन्दोलन के परिणामस्वरूप जिन नवीन धर्मों का उदय और विकास हुआ, उनमें बौद्ध धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है।

गौतम बुद्ध का जीवन परिचय :

गौतम बुद्ध का जन्म लगभग 563 ई० पू० में कपिलवस्तु के समीप लुम्बिनी वन (आधुनिक रुमिनदेई) में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन कपिलवस्तु के शाक्यगण के प्रधान थे। उनकी माता का नाम मायादेवी था, जो कोलियागण की राजकुमारी थी। जन्म के समय ही ज्योतिषियों ने यह भविष्यवाणी की थी कि आगे चलकर यह बालक एक चक्रवर्ती राजा या महान संन्यासी बनेगा। गौतम के जन्म के एक सप्ताह के अन्दर ही उनकी माता की मृत्यु हो गई, अतएव बालक का पालन-पोषण उनकी मौसी प्रजापति गौतमी ने किया। इस बालक का नाम सिद्धार्थ रखा गया, परन्तु गौतम गोत्र में उत्पन्न होने के कारण उन्हें गौतम भी कहा जाता था। महान संन्यासी गौतम बुद्ध का पालन-पोषण राजसी ऐश्वर्य एवं वैभव के वातावरण में हुआ। उन्हें राजकुमारों के अनुरूप शिक्षा-दीक्षा दी गई। उनके निवास के लिए विभिन्न ऋतुओं में रहने योग्य महल, उपवन इत्यादि बनाये गये। उन्हें सदैव राग-रंग में बंधे रहने का प्रयास किया गया। बाद के वर्षों में उन्होंने –

- 16 वर्ष के आयु में विवाह पत्नी यशोधरा (गोपा),
- पुत्र – राहुल,
- विहार के लिए जाने पर पहली बार – वृद्ध को देखना, दूसरी बार – व्याधिग्रस्त मनुष्य, तीसरी बार – एक मृतक तथा अंततः एक प्रसन्नचित संन्यासी को देखना।
- 29 वर्ष की अवस्था में – गृहत्याग, जिसे महाभिनिष्क्रमण कहा।
- 6 वर्ष तक साधना करने के बाद 35 वर्ष की अवस्था में अपनी समाधि के 49वें दिन उन्हें उरुवेला ग्राम में निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे अचानक सर्वोच्च ज्ञान का अनुभव हुआ।

Continue ....

History

Date: 23.07.2020

(2)

Class: B.A. Part-I (Hons.) Paper-1st

बौद्ध धर्म की विशेषताएँ : बौद्ध धर्म का मूलाधार 'चत्वारि आर्य सत्यानि:' है। इस धर्म के सारे सिद्धान्त तथा बाद में विकसित विभिन्न दार्शनिक मत व वादों के यही आधार हैं। ये चार आर्य सत्य —

(क) दुःख
(ख) दुःख समुदय
(ग) दुःख-निरोध तथा
(घ) दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा (अष्टांगिक मार्ग)

दस शील —

1. अहिंसा
2. सत्य बोलना
3. चोरी न करना (अस्तेय)
4. ब्रह्मचर्य
5. मद्य निषेध
6. असमय भोजन न करना
7. धन संचय न करना
8. सुखप्रद बिस्तर पर नहीं सोना
9. व्यभिचार नहीं करना
10. नृत्य, गान से दूर रहना।

बौद्ध धर्म के शब्द एवं उनके अर्थ :—

प्रवज्जा — संघ में प्रवेश पाना
श्रामणेतर — प्रवज्जा लेने वाला व्यक्ति
उपोसथ — भिक्षुओं द्वारा की जाने वाली धार्मिक चर्चा
शिक्षापद — दस शीलों की शिक्षा प्राप्त करने वाले श्रामणेतर शिक्षा पद की उपाधि पाते थे।

पाँच अणुव्रत —

(क) अहिंसाणु व्रत,
(ख) सत्याणुव्रत,
(ग) अस्तेयाणुव्रत,
(घ) ब्रह्मचर्याणुव्रत,
(ङ) अपरिग्रहाणुव्रत।

Continue.....